सम्पूर्ण जन्मपत्री

परम्परागत पोथी-शैली — सभी चक्र, तालिकाएँ व विस्तृत फलादेश

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	**अभय शर्मा (काल्पनिक)**
जन्म तिथि व समय	**12 जुलाई 1992 · 09:45**
जन्म स्थान	**जयपुर**
लग्न · राशि · नक्षत्र	**सिंह · वृश्चिक · ज्येष्ठा**
वर्तमान दशा	**सूर्य महादशा (2023–2029)**
रिपोर्ट तिथि	**24 सितम्बर 2026 · प्रातः 8:02**

॥ पारस वाणी ॥

parasvani · वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है

जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुं ड ली प रि च य

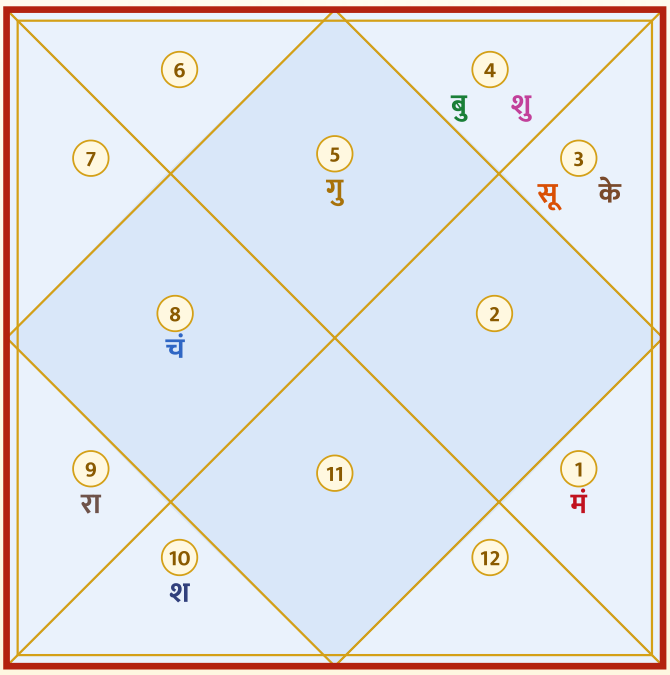

जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) · लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	**सिंह**	**1**	**ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य**
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

कुंडली-त्रय — लग्न · चंद्र · सूर्य

तीनों दृष्टियों की कुंडलियाँ (उत्तर भारतीय पद्धति)

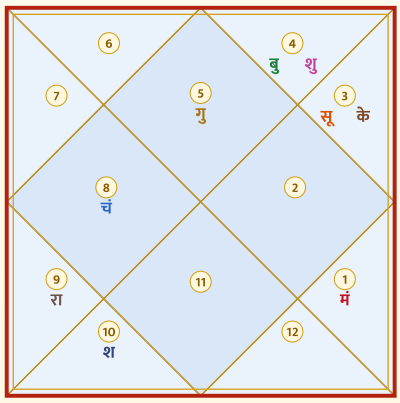

लग्न कुंडली — सिंह

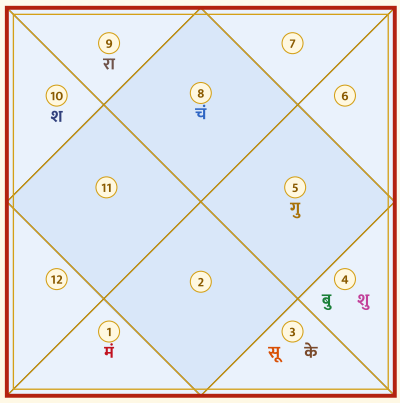

चंद्र कुंडली — वृश्चिक

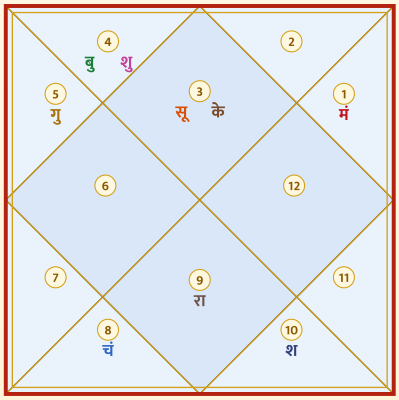

सूर्य कुंडली — मिथुन

ग्रह स्पष्ट — अंश-कला सहित

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	भाव
सूर्य	मिथुन	26°19'	पुनर्वसु	11
चंद्र	वृश्चिक	27°02'	ज्येष्ठा	4
मंगल	मेष	26°07'	भरणी	9
बुध	कर्क	21°19'	आश्लेषा	12
गुरु	सिंह	17°46'	पूर्वाफाल्गुनी	1

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	भाव
शुक्र	कर्क	4°09'	पुष्य	12
शनि (व)	मकर	23°14'	श्रवण	6
राहु (व)	धनु	5°49'	मूल	5
केतु (व)	मिथुन	5°49'	मृगशिरा	11

वर्ग कुंडलियाँ

नवमांश समेत छह प्रमुख वर्ग — सूक्ष्म बल-विचार हेतु

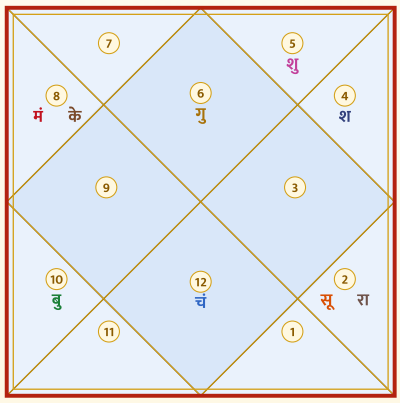

नवमांश (D9) — लग्न कन्या

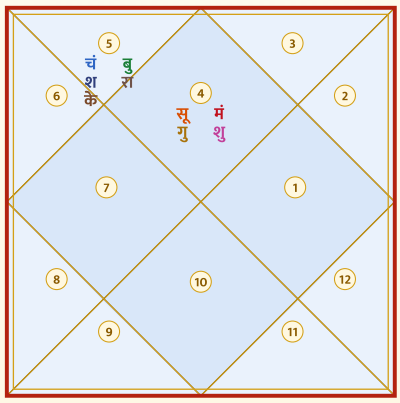

होरा (D2) — लग्न कर्क

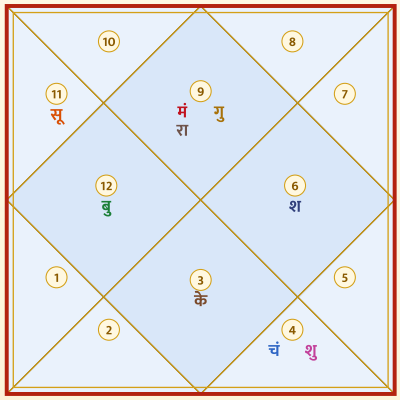

द्रेष्काण (D3) — लग्न धनु

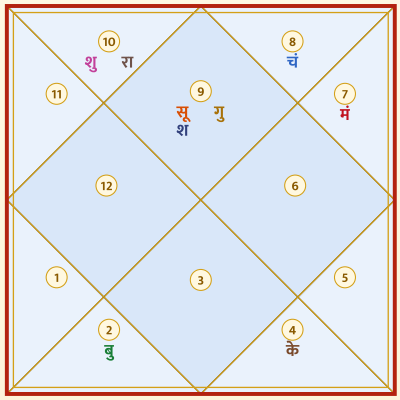

सप्तमांश (D7) — लग्न धनु

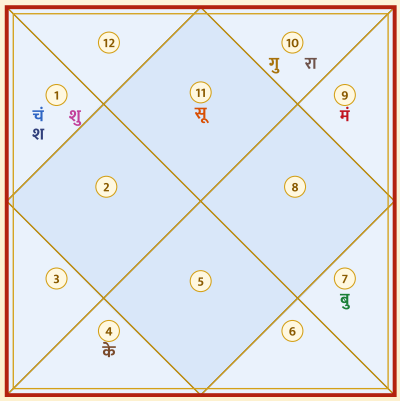

दशमांश (D10) — लग्न कुम्भ

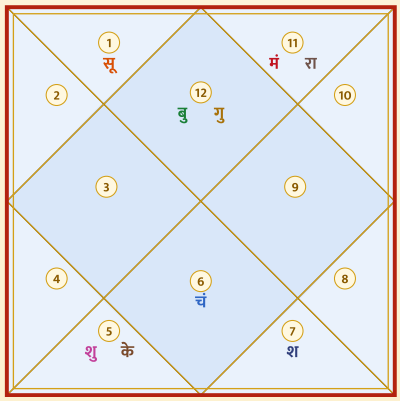

द्वादशांश (D12) — लग्न मीन

पंचांग शुद्धि — जन्म-क्षण

विक्रम संवत 2049 · शक संवत 1914 · वैशाख मास

तिथि	**शुक्ल त्रयोदशी**	वार	**रविवार**
नक्षत्र	**ज्येष्ठा (4 चरण)**	योग	ब्रह्म
करण	तैतिल	सूर्योदय / अस्त	05:41 / 19:23
दिनमान	34 घटी 16 पल 9 विपल	रात्रिमान	25 घटी 43 पल 51 विपल
इष्टकाल	**10 घटी 9 पल 48 विपल**	**भयात / भोग**	**50 घटी 11 पल 30 विपल / 64 घटी 36 पल 52 विपल**

अवकहड़ा चक्र

नामाक्षर	**यू**	राशि	**वृश्चिक** (स्वामी मंगल)
नक्षत्र-चरण	ज्येष्ठा — 4	नक्षत्र-स्वामी	बुध
गण	राक्षस	योनि	मृग
नाड़ी	आदि	वर्ण	ब्राह्मण
वश्य	कीट	तत्व	जल
लौह (लोहे) का पाया			

सुदर्शन चक्र

भीतरी घेरा सूर्य-कुंडली (मिथुन लग्न) · मध्य चंद्र-कुंडली (वृश्चिक) · बाहरी लग्न-कुंडली

(सिं ह)

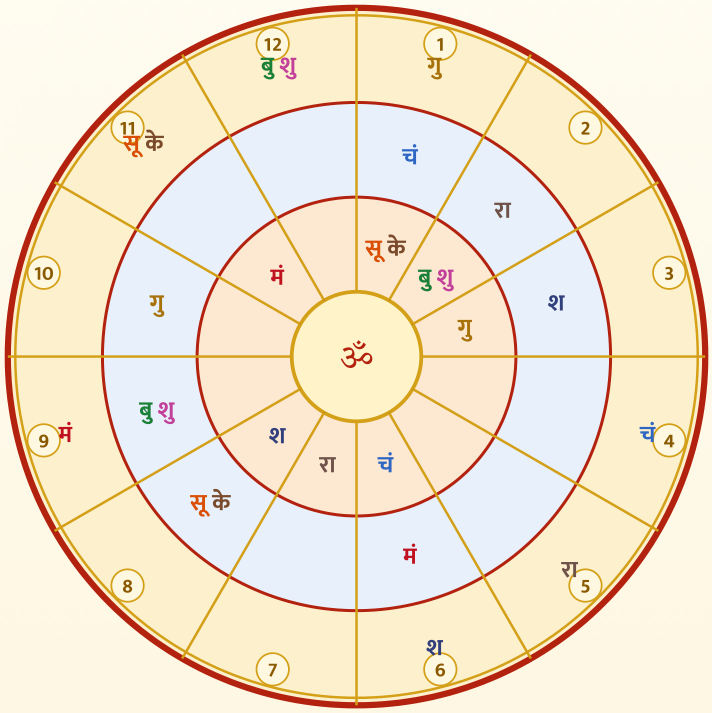

तीनों दृष्टियों में जो फल एक-सा मिले, वही दृढ़ माना जाता है

विशेष विचार

गण्डमूल	**हाँ — ज्येष्ठा नक्षत्र, मूल-शांति विचारणीय**
मांगलिक विचार	मंगल दोष नहीं
कालसर्प	नहीं

❖ ❖

❖ ✦ ❖

भाव-चलित एवं ग्रह-मैत्री

भा व - म ध्य / सं धि ग ण ना से ग्र हों के वा स्त वि क भा व

ग्रह	राशि-भाव	चलित-भाव	टिप्पणी

सूर्य	11	11	—
चंद्र	4	4	—
मंगल	9	9	—
बुध	12	12	—
गुरु	1	1	—
शुक्र	**12**	**11**	**भाव बदला ◀**
शनि	6	6	—
राहु	5	5	—
केतु	11	11	—

पंचधा मैत्री (नैसर्गिक + तात्कालिक)

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	—	सम	अधिमित्र	मित्र	अधिमित्र	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	—	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	अधिमित्र	सम	—	सम	सम	मित्र	मित्र
बुध	अधिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	—	मित्र	सम	शत्रु
गुरु	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	सम	—	सम	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	सम	मित्र	—	सम
शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	शत्रु	सम	—

घात चक्र — वृश्चिक राशि

इन काल-खंडों में नया / शुभ कार्य आरंभ न करें (विवाह-मंगल कार्य अपवाद)

घात मास	**आश्विन**	घात तिथि	1 · 6 · 11
घात वार	शुक्रवार	घात नक्षत्र	रेवती
घात योग	व्यतीपात	घात करण	गर
घात प्रहर	1 · 2 · 7		

पहले से चल रहे कार्य जारी रखने में घात चक्र का दोष नहीं माना जाता

अष्टकवर्ग

भिन्नाष्टकवर्ग (सात ग्रहों के शुभ-बिंदु, भाव-क्रम में) + सर्वाष्टकवर्ग

ग्रह	1 सिं	2 कन	3 तु	4 वृश	5 ध	6 मक	7 कुं	8 मी	9 मे	10 वृ	11 मि	12 क	योग
सूर्य	2	4	3	4	5	7	3	2	6	3	5	4	**48**
चंद्र	4	5	3	6	2	6	3	4	4	7	4	1	**49**
मंगल	3	3	4	4	2	5	2	1	4	5	3	3	**39**
बुध	4	5	4	6	3	4	5	4	5	5	4	5	**54**
गुरु	5	4	3	5	6	3	4	6	5	7	4	4	**56**
शुक्र	3	6	4	5	5	2	3	7	5	5	4	3	**52**
शनि	2	3	1	2	4	5	2	4	3	4	7	2	**39**
सर्वाष्टक	**23**	**30**	**22**	**32**	**27**	**32**	**22**	**28**	**32**	**36**	**31**	**22**	**337**

30+ बिंदु वाला भाव बलवान (हरा) · 22 या कम वाला भाव निर्बल (लाल) — उस भाव के कार्यों में विशेष सावधानी

सर्वाष्टकवर्ग — भाव-क्रम सार

भाव	राशि	बिंदु	संकेत
1	सिंह	23	सामान्य
2	**कन्या**	**30**	**बलवान**
3	तुला	22	निर्बल
4	**वृश्चिक**	**32**	**बलवान**
5	धनु	27	सामान्य
6	**मकर**	**32**	**बलवान**

भाव	राशि	बिंदु	संकेत
7	कुम्भ	22	निर्बल
8	मीन	28	सामान्य
9	**मेष**	**32**	**बलवान**
10	**वृषभ**	**36**	**बलवान**
11	**मिथुन**	**31**	**बलवान**
12	कर्क	22	निर्बल

❖ ✦ ❖

आप ~ जन्म से मिली बनावट

यह जीवन भर वही रहती है ~ आपकी अपनी कुंडली की गणना से

आपका तत्त्व-नक्शा

🔥 अग्नि		47%
🌱 पृथ्वी		17%
🌬️ वायु		25%
💧 जल		10%
🌌 आकाश		0%

अग्नि आपमें प्रबल है — इसलिए निर्णय जल्दी लेते हैं और रुकना कठिन लगता है। यही आपकी सबसे बड़ी ताक़त है और सबसे बड़ी चूक भी। जहाँ ठहरकर सोचना ज़रूरी हो, वहाँ एक रात का समय ज़रूर लीजिए।

आकाश आपमें कम है — रोज़ के काम तो सधते हैं पर बड़ा चित्र दिखाई नहीं देता, और मन उलझा-उलझा रहता है। दिन में दस मिनट बिना फ़ोन के, बिना काम के बैठिए। जिन्हें यह अभ्यास लगता है, उनका मन सबसे जल्दी हल्का होता है।

किस आधार पर: 9 ग्रह + लग्न (सिंह) + जन्म-नक्षत्र, हर एक अपने बल के अनुपात में

आ प की प्र कृ ति ~ वा त · पि त्त · क फ

🌬️ वात		32%
🔥 पित्त		45%
💧 कफ		23%

आपकी बनावट पित्त-प्रधान है — तेज़, स्पष्ट और नेतृत्व करने वाली। जो ठान लेते हैं वह करके छोड़ते हैं।

ठंडा व सादा भोजन, दोपहर की तेज़ धूप से बचाव, और गुस्से पर थोड़ा ठहराव — ये तीनों आपके काम के हैं। भूख बहुत देर मत रोकिए, खाली पेट आपका स्वभाव सबसे तीखा हो जाता है। ⚠ यह स्वभाव की बात है, रोग की नहीं — शरीर से जुड़ी कोई भी चिंता हो तो चिकित्सक ही देखेंगे।

आ प का स्व भा व ~ ग ण व गु ण

गण	गुण	जन्म-नक्षत्र
राक्षस	तम-प्रधान	ज्येष्ठा

गण राक्षस — इच्छा प्रबल और मन दृढ़। जो ठान लेते हैं वह करके छोड़ते हैं, पर जल्दी उत्तेजित भी हो जाते हैं; वहीं ठहराव सबसे ज़्यादा काम आता है।

तम आपमें प्रबल है — गहराई में उतरने, कठिन काम करने और अकेले टिके रहने की शक्ति है। पर मन भारी भी जल्दी होता है, इसलिए दिनचर्या और संगति दोनों सँभालकर रखिए।

❖ ✦ ❖

आपकी कुंडली के योग

शा स्त्री य ग ण ना से नि क ले ~ जो इ सी कुं ड ली में स च मु च ब ने हैं

योग	फल
गजकेसरी योग शुभ	चंद्र से केंद्र में गुरु — यश, बुद्धि, धन व समाज में सम्मान देने वाला श्रेष्ठ योग।
केमद्रुम भंग शुभ	चंद्र के दोनों ओर ग्रह नहीं थे, पर यह योग भंग हो गया (चंद्र लग्न से केंद्र (भाव 4) में) — अतः केमद्रुम दोष लागू नहीं होता।
वेशी योग शुभ	सूर्य से द्वितीय में ग्रह — सत्यनिष्ठ, यशस्वी व परोपकारी।

योग	फल
हर्ष विपरीत राजयोग शुभ	6वें भाव का स्वामी दुःस्थान में — कठिनाई के बाद अप्रत्याशित उन्नति व शत्रु-विजय।
सूर्य-ग्रहण दोष दोष	सूर्य के साथ राहु/केतु — पिता-सुख व आत्मविश्वास में बाधा; सूर्य-उपाय हितकर।

सम्पूर्ण विंशोत्तरी — अंतर्दशा तालिकाएँ

जन्म से — हर महादशा की सभी अंतर्दशाएँ · वर्तमान ◀ चिह्न से

बुध महादशा
20/04/1979 – 19/04/1996

अंतर्दशा	से	तक
बुध	20/04/1979	15/09/1981
केतु	15/09/1981	13/09/1982
शुक्र	13/09/1982	13/07/1985
सूर्य	13/07/1985	20/05/1986
चंद्र	20/05/1986	19/10/1987
मंगल	19/10/1987	16/10/1988
राहु	16/10/1988	05/05/1991
गुरु	05/05/1991	10/08/1993
शनि	10/08/1993	19/04/1996

केतु महादशा
19/04/1996 – 20/04/2003

अंतर्दशा	से	तक
केतु	19/04/1996	15/09/1996
शुक्र	15/09/1996	15/11/1997
सूर्य	15/11/1997	23/03/1998
चंद्र	23/03/1998	22/10/1998
मंगल	22/10/1998	20/03/1999
राहु	20/03/1999	07/04/2000
गुरु	07/04/2000	14/03/2001
शनि	14/03/2001	22/04/2002
बुध	22/04/2002	20/04/2003

शुक्र महादशा
20/04/2003 – 19/04/2023

अंतर्दशा	से	तक
शुक्र	20/04/2003	19/08/2006
सूर्य	19/08/2006	19/08/2007
चंद्र	19/08/2007	19/04/2009
मंगल	19/04/2009	19/06/2010
राहु	19/06/2010	19/06/2013
गुरु	19/06/2013	18/02/2016
शनि	18/02/2016	19/04/2019
बुध	19/04/2019	17/02/2022
केतु	17/02/2022	19/04/2023

सूर्य महादशा ◀
19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	**23/02/2026**	**05/02/2027**
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा
19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

मंगल महादशा
19/04/2039 – 19/04/2046

अंतर्दशा	से	तक
मंगल	19/04/2039	15/09/2039
राहु	15/09/2039	03/10/2040
गुरु	03/10/2040	09/09/2041
शनि	09/09/2041	19/10/2042
बुध	19/10/2042	16/10/2043
केतु	16/10/2043	13/03/2044
शुक्र	13/03/2044	13/05/2045
सूर्य	13/05/2045	18/09/2045
चंद्र	18/09/2045	19/04/2046

राहु महादशा
19/04/2046 – 18/04/2064

अंतर्दशा	से	तक
राहु	19/04/2046	30/12/2048
गुरु	30/12/2048	26/05/2051
शनि	26/05/2051	01/04/2054
बुध	01/04/2054	18/10/2056
केतु	18/10/2056	06/11/2057
शुक्र	06/11/2057	05/11/2060
सूर्य	05/11/2060	30/09/2061
चंद्र	30/09/2061	01/04/2063
मंगल	01/04/2063	18/04/2064

गुरु महादशा
18/04/2064 – 18/04/2080

अंतर्दशा	से	तक
गुरु	18/04/2064	07/06/2066
शनि	07/06/2066	18/12/2068
बुध	18/12/2068	26/03/2071
केतु	26/03/2071	01/03/2072
शुक्र	01/03/2072	31/10/2074
सूर्य	31/10/2074	19/08/2075
चंद्र	19/08/2075	18/12/2076
मंगल	18/12/2076	24/11/2077
राहु	24/11/2077	18/04/2080

सम्पूर्ण योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

३६ वर्ष का चक्र — हर योगिनी की सभी अंतर-योगिनियाँ · वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी

स्वामी बुध · 5 वर्ष · 21/08/1988 – 21/08/1993

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	21/08/1988	01/05/1989
उल्का	01/05/1989	02/03/1990
सिद्धा	02/03/1990	20/02/1991
संकटा	20/02/1991	31/03/1992
मंगला	31/03/1992	21/05/1992
पिंगला	21/05/1992	31/08/1992
धान्या	31/08/1992	30/01/1993
भ्रामरी	30/01/1993	21/08/1993

उल्का योगिनी

स्वामी शनि · 6 वर्ष · 21/08/1993 – 21/08/1999

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	21/08/1993	21/08/1994
सिद्धा	21/08/1994	21/10/1995
संकटा	21/10/1995	19/02/1997
मंगला	19/02/1997	21/04/1997
पिंगला	21/04/1997	21/08/1997
धान्या	21/08/1997	19/02/1998
भ्रामरी	19/02/1998	21/10/1998
भद्रिका	21/10/1998	21/08/1999

सिद्धा योगिनी

स्वामी शुक्र · 7 वर्ष · 21/08/1999 – 21/08/2006

अंतर-योगिनी	से	तक
सिद्धा	21/08/1999	30/12/2000
संकटा	30/12/2000	21/07/2002
मंगला	21/07/2002	01/10/2002
पिंगला	01/10/2002	20/02/2003
धान्या	20/02/2003	21/09/2003
भ्रामरी	21/09/2003	01/07/2004
भद्रिका	01/07/2004	21/06/2005
उल्का	21/06/2005	21/08/2006

संकटा योगिनी

स्वामी राहु · 8 वर्ष · 21/08/2006 – 21/08/2014

अंतर-योगिनी	से	तक
संकटा	21/08/2006	31/05/2008
मंगला	31/05/2008	20/08/2008
पिंगला	20/08/2008	30/01/2009
धान्या	30/01/2009	30/09/2009
भ्रामरी	30/09/2009	21/08/2010
भद्रिका	21/08/2010	01/10/2011
उल्का	01/10/2011	30/01/2013
सिद्धा	30/01/2013	21/08/2014

मंगला योगिनी

स्वामी चंद्र · 1 वर्ष · 21/08/2014 – 21/08/2015

अंतर-योगिनी	से	तक
मंगला	21/08/2014	31/08/2014
पिंगला	31/08/2014	20/09/2014
धान्या	20/09/2014	21/10/2014
भ्रामरी	21/10/2014	30/11/2014
भद्रिका	30/11/2014	20/01/2015
उल्का	20/01/2015	22/03/2015
सिद्धा	22/03/2015	01/06/2015
संकटा	01/06/2015	21/08/2015

पिंगला योगिनी

स्वामी सूर्य · 2 वर्ष · 21/08/2015 – 21/08/2017

अंतर-योगिनी	से	तक
पिंगला	21/08/2015	01/10/2015
धान्या	01/10/2015	01/12/2015
भ्रामरी	01/12/2015	20/02/2016
भद्रिका	20/02/2016	31/05/2016
उल्का	31/05/2016	30/09/2016
सिद्धा	30/09/2016	19/02/2017
संकटा	19/02/2017	31/07/2017
मंगला	31/07/2017	21/08/2017

धान्या योगिनी

स्वामी गुरु · 3 वर्ष · 21/08/2017 – 20/08/2020

अंतर-योगिनी	से	तक
धान्या	21/08/2017	20/11/2017
भ्रामरी	20/11/2017	22/03/2018
भद्रिका	22/03/2018	21/08/2018
उल्का	21/08/2018	19/02/2019
सिद्धा	19/02/2019	20/09/2019
संकटा	20/09/2019	21/05/2020
मंगला	21/05/2020	20/06/2020
पिंगला	20/06/2020	20/08/2020

भ्रामरी योगिनी

स्वामी मंगल · 4 वर्ष · 20/08/2020 – 20/08/2024

अंतर-योगिनी	से	तक
भ्रामरी	20/08/2020	30/01/2021
भद्रिका	30/01/2021	21/08/2021
उल्का	21/08/2021	21/04/2022
सिद्धा	21/04/2022	30/01/2023
संकटा	30/01/2023	21/12/2023
मंगला	21/12/2023	30/01/2024
पिंगला	30/01/2024	21/04/2024
धान्या	21/04/2024	20/08/2024

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध · 5 वर्ष · 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	**01/03/2026**	**19/02/2027**
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि · 6 वर्ष · 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035

सिद्धा योगिनी

स्वामी शुक्र · 7 वर्ष · 21/08/2035 – 21/08/2042

अंतर-योगिनी	से	तक
सिद्धा	21/08/2035	30/12/2036
संकटा	30/12/2036	21/07/2038
मंगला	21/07/2038	30/09/2038
पिंगला	30/09/2038	19/02/2039
धान्या	19/02/2039	20/09/2039
भ्रामरी	20/09/2039	30/06/2040
भद्रिका	30/06/2040	21/06/2041
उल्का	21/06/2041	21/08/2042

संकटा योगिनी

स्वामी राहु · 8 वर्ष · 21/08/2042 – 21/08/2050

अंतर-योगिनी	से	तक
संकटा	21/08/2042	31/05/2044
मंगला	31/05/2044	20/08/2044
पिंगला	20/08/2044	29/01/2045
धान्या	29/01/2045	30/09/2045
भ्रामरी	30/09/2045	21/08/2046
भद्रिका	21/08/2046	30/09/2047
उल्का	30/09/2047	29/01/2049
सिद्धा	29/01/2049	21/08/2050

मंगला योगिनी

स्वामी चंद्र · 1 वर्ष · 21/08/2050 – 21/08/2051

अंतर-योगिनी	से	तक
मंगला	21/08/2050	31/08/2050
पिंगला	31/08/2050	20/09/2050
धान्या	20/09/2050	20/10/2050
भ्रामरी	20/10/2050	30/11/2050
भद्रिका	30/11/2050	20/01/2051
उल्का	20/01/2051	22/03/2051
सिद्धा	22/03/2051	01/06/2051
संकटा	01/06/2051	21/08/2051

पिंगला योगिनी

स्वामी सूर्य · 2 वर्ष · 21/08/2051 – 20/08/2053

अंतर-योगिनी	से	तक
पिंगला	21/08/2051	30/09/2051
धान्या	30/09/2051	30/11/2051
भ्रामरी	30/11/2051	19/02/2052
भद्रिका	19/02/2052	31/05/2052
उल्का	31/05/2052	30/09/2052
सिद्धा	30/09/2052	19/02/2053
संकटा	19/02/2053	31/07/2053
मंगला	31/07/2053	20/08/2053

धान्या योगिनी

स्वामी गुरु · 3 वर्ष · 20/08/2053 – 20/08/2056

अंतर-योगिनी	से	तक
धान्या	20/08/2053	20/11/2053
भ्रामरी	20/11/2053	21/03/2054
भद्रिका	21/03/2054	21/08/2054
उल्का	21/08/2054	19/02/2055
सिद्धा	19/02/2055	20/09/2055
संकटा	20/09/2055	21/05/2056
मंगला	21/05/2056	20/06/2056
पिंगला	20/06/2056	20/08/2056

भ्रामरी योगिनी

स्वामी मंगल · 4 वर्ष · 20/08/2056 – 20/08/2060

अंतर-योगिनी	से	तक
भ्रामरी	20/08/2056	29/01/2057
भद्रिका	29/01/2057	20/08/2057
उल्का	20/08/2057	21/04/2058
सिद्धा	21/04/2058	30/01/2059
संकटा	30/01/2059	20/12/2059
मंगला	20/12/2059	30/01/2060
पिंगला	30/01/2060	20/04/2060
धान्या	20/04/2060	20/08/2060

भद्रिका योगिनी

स्वामी बुध · 5 वर्ष · 20/08/2060 – 20/08/2065

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2060	01/05/2061
उल्का	01/05/2061	01/03/2062
सिद्धा	01/03/2062	19/02/2063
संकटा	19/02/2063	31/03/2064
मंगला	31/03/2064	21/05/2064
पिंगला	21/05/2064	30/08/2064
धान्या	30/08/2064	29/01/2065
भ्रामरी	29/01/2065	20/08/2065

उल्का योगिनी

स्वामी शनि · 6 वर्ष · 20/08/2065 – 21/08/2071

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2065	20/08/2066
सिद्धा	20/08/2066	21/10/2067
संकटा	21/10/2067	19/02/2069
मंगला	19/02/2069	20/04/2069
पिंगला	20/04/2069	20/08/2069
धान्या	20/08/2069	19/02/2070
भ्रामरी	19/02/2070	20/10/2070
भद्रिका	20/10/2070	21/08/2071

❖ ✦ ❖

कुंडली परिचय — लग्न, राशि, नक्षत्र व जन्म-संस्कार

अ ध्या य 1

कुंडली परिचय — लग्न, राशि, नक्षत्र व जन्म-संस्कार

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली **सिंह लग्न, वृश्चिक चंद्र राशि और ज्येष्ठा नक्षत्र** के संगम पर बनी है — यह तीनों मिलकर एक ऐसे व्यक्तित्व की नींव रखते हैं जो भीतर से गहरा, संकल्पशील और स्वाभिमानी है, पर जिसकी यात्रा सरल नहीं, सार्थक है।

लग्न — सिंह : आत्मसम्मान और नेतृत्व की धुरी

सिंह लग्न सूर्य का घर है — और आपके लग्न में स्वयं **गुरु विराजमान हैं**, जो मित्र राशि में हैं और युवा अवस्था में हैं। इसका अर्थ यह है कि आपके व्यक्तित्व में एक स्वाभाविक गरिमा, बड़प्पन और विस्तार का भाव है। लोग आपकी ओर सहज आकर्षित होते हैं। गुरु का लग्न में होना **गजकेसरी योग** का आधार भी बनता है — क्योंकि चंद्र से केंद्र (चतुर्थ भाव) में गुरु हैं — जो यश, बुद्धि और समाज में सम्मान देने वाला श्रेष्ठ योग माना जाता है।

साथ ही **वेशी योग** भी बनता है — सूर्य से द्वितीय भाव में ग्रह हैं — जो सत्यनिष्ठा और परोपकारी स्वभाव देता है। आप जो कहते हैं, उसे निभाने की कोशिश करते हैं — यह आपकी पहचान है।

लग्नेश सूर्य एकादश भाव में हैं — यानी आपका आत्म-बल और पहचान मित्रों, समाज और लाभ के क्षेत्र से जुड़ी है। हालाँकि सूर्य की

अवस्था **मृत** है, इसलिए यह बल पूरी तरह प्रकट होने में समय लगता है — जो धैर्य माँगता है।

चंद्र राशि — वृश्चिक : गहराई और रूपांतरण

वृश्चिक राशि में चंद्र **नीच** के हैं — यह मन की एक विशेष संरचना बताता है। इसका सीधा अर्थ यह नहीं कि जीवन कठिन है; बल्कि इसका अर्थ है कि **आपका मन बहुत गहरा है, पर उसे बाहर रखना कठिन लगता है।** भावनाएँ तीव्र होती हैं, निर्णय जल्दी होते हैं और एक बार ठान लें तो पलटते नहीं। चंद्र चतुर्थ भाव में बैठे हैं — घर, माता और मन का भाव — जो बताता है कि घर और परिवार से भावनात्मक जुड़ाव बहुत गहरा है।

शुभ बात यह है कि **केमद्रुम भंग** हो चुका है — चंद्र लग्न से केंद्र में हैं, इसलिए केमद्रुम दोष लागू नहीं होता। और चंद्र कुंडली में गुरु दशम भाव में हैं — जो मन से जुड़ी कर्म-शक्ति को बल देता है।

नक्षत्र — ज्येष्ठा : बुध का राज, इंद्र की छाया

ज्येष्ठा नक्षत्र के स्वामी **बुध** हैं और इसके देवता इंद्र हैं — यह नक्षत्र नेतृत्व, साहस और कभी-कभी एकाकीपन का संकेत देता है। ज्येष्ठा में जन्मे व्यक्ति अपने परिवार या क्षेत्र में एक **जिम्मेदार, अग्रणी भूमिका** निभाते हैं — पर उनकी यह भूमिका कभी-कभी उन्हें थका भी देती है।

यह **गण्डमूल नक्षत्र** है — परंपरा में इसके लिए मूल-शांति विचारणीय मानी जाती है। यदि यह संस्कार बचपन में नहीं हुआ हो, तो किसी शुभ अवसर पर करवाया जा सकता है।

जन्म-संस्कार — पंचांग का संदेश

आपका जन्म **शुक्ल त्रयोदशी, रविवार** को हुआ — रविवार सूर्य का वार है और त्रयोदशी शिव की प्रिय तिथि। **गण राक्षस** है — जो तीव्र इच्छाशक्ति और सीधे स्वभाव का संकेत है, दोष नहीं। **नाड़ी आदि** है जो विवाह-मिलान में ध्यान माँगती है।

मंगल दोष नहीं है और **कालसर्प दोष भी नहीं है** — शास्त्रीय अंश-गणना से यह स्पष्ट होता है। कई बार बिना अंश देखे इसे दोष कह दिया जाता है, पर आपकी कुंडली में यह भंग है।

मुख्य बातें

- **सिंह लग्न में गुरु** — व्यक्तित्व में गरिमा, विस्तार और गजकेसरी योग का आशीर्वाद

- **वृश्चिक चंद्र** — गहरा मन, तीव्र भावनाएँ; केमद्रुम दोष लागू नहीं
- **ज्येष्ठा नक्षत्र** — नेतृत्व और जिम्मेदारी स्वाभाविक; मूल-शांति विचारणीय
- **वेशी योग** — सत्यनिष्ठ और परोपकारी स्वभाव
- **मंगल दोष व कालसर्प दोष** — दोनों नहीं हैं; कुंडली भयमुक्त है

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

गजकेसरीसञ्जातस्तेजस्वी धनवान् भवेत् ।
मेधावी गुणसम्पन्नो राजप्रियकरो नरः ॥

गजकेसरी योग में जन्मा व्यक्ति तेजस्वी और धनवान होता है, बुद्धिमान और गुणों से भरा — तथा बड़े लोगों का प्रिय बनता है।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ३६

❖ ✦ ❖

व्यक्तित्व, स्वभाव व जीवन-दृष्टि

अ ध्या य 2

व्यक्तित्व, स्वभाव व जीवन-दृष्टि

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में सिंह लग्न और गुरु का लग्न में विराजमान होना — यह संयोग बताता है कि आप भीतर से एक गहरी गरिमा और विस्तार लेकर इस संसार में आए हैं। साथ में वृश्चिक चंद्र और ज्येष्ठा नक्षत्र — यह जोड़ आपके स्वभाव को न केवल आत्मविश्वासी बनाता है, बल्कि भीतर से जिज्ञासु, तीव्र और कभी-कभी अकेलापन महसूस करने वाला भी।

सिंह लग्न : आत्मसम्मान और नेतृत्व की धुरी

सिंह लग्न वाले व्यक्ति स्वाभाविक रूप से किसी भी समूह में केंद्र बन जाते हैं — न इसलिए कि वे यह चाहते हैं, बल्कि इसलिए कि उनकी उपस्थिति में एक वज़न होता है। **आपके भीतर नेतृत्व करने की एक स्वाभाविक इच्छा है**, और जब कोई आपकी अनदेखी करे या आपको छोटा समझे, तो यह भीतर तक लगता है। यह कमज़ोरी नहीं — यह सिंह लग्न की सहज संवेदनशीलता है।

लग्नेश सूर्य आपके ग्यारहवें भाव में हैं — यानी आपकी पहचान मित्रों, समूहों और बड़े लक्ष्यों से बनती है। आप अकेले काम करने से अधिक तब खिलते हैं जब किसी बड़े उद्देश्य या समुदाय का हिस्सा हों। **वेशी योग भी इसी सूर्य से बन रहा है — जो आपको सत्यनिष्ठ, यशस्वी और दूसरों के काम आने वाला बनाता है।**

गुरु लग्न में : बुद्धि, उदारता और आंतरिक विस्तार

लग्न में गुरु का होना इस कुंडली की सबसे बड़ी शक्ति है। गुरु यहाँ मित्र राशि में हैं, युवा अवस्था में हैं, और षड्बल में भी भरपूर बलवान हैं — अर्थात **इनका फल पूरे जीवन में सबसे अधिक स्पष्ट और सुनिश्चित है।** आप जो बात कहते हैं, उसमें एक स्वाभाविक भार होता है। लोग आपकी बात सुनते हैं — भले ही आपने कोई बड़ा पद न पाया हो।

गुरु आपके पाँचवें और सातवें भाव को देख रहे हैं — इसका अर्थ है कि आपकी बुद्धि, आपके रिश्ते और आपकी जीवन-दृष्टि — तीनों में एक उदारता और विस्तार की भावना रहती है। आप संकीर्णता से जल्दी ऊब जाते हैं।

वृश्चिक चंद्र और ज्येष्ठा नक्षत्र : गहराई और तीव्रता

चंद्र यहाँ नीच के हैं, और भाव-बल की दृष्टि से चतुर्थ भाव में — यानी मन का घर। **आपका मन बहुत गहरा सोचता है, पर कभी-कभी उसी गहराई में खो भी जाता है।** भावनाएँ ऊपर से शांत दिखती हैं, पर भीतर तीव्र होती हैं। जिससे आप प्रेम करते हैं, उसके लिए सब कुछ करने को तैयार रहते हैं — पर धोखा या अपमान सहना आपके लिए बहुत कठिन है।

ज्येष्ठा नक्षत्र का स्वामी बुध है, और ज्येष्ठा के जातकों में एक अद्भुत बात होती है — वे जिम्मेदारी ओढ़ने में कभी पीछे नहीं हटते, चाहे कोई कहे या न कहे। **बड़ों की भूमिका निभाना, परिवार या समूह को सँभालना — यह आपकी फ़ितरत में है।** गण राक्षस है — इसका अर्थ यह नहीं कि स्वभाव कठोर है, बल्कि यह है कि आप नियम-कानून से अधिक अपने भीतर की आवाज़ पर चलते हैं।

गजकेसरी योग और जीवन-दृष्टि

चंद्र से केंद्र में गुरु — **गजकेसरी योग** बन रहा है। यह योग यश, बुद्धि और समाज में सम्मान देता है। इसका प्रभाव यह है कि आप जहाँ भी जाते हैं, एक छाप छोड़ते हैं। लोग आपको याद रखते हैं।

आपकी जीवन-दृष्टि मूलतः **आदर्शवादी** है — आप चाहते हैं कि काम भी हो, और उसमें अर्थ भी हो। केवल पैसे के लिए काम करना आपको भीतर से संतुष्ट नहीं करता। नवम भाव में स्वराशि मंगल — भाग्य और धर्म का भाव — यह बताता है कि आपमें साहस और दिशा दोनों हैं, बस कभी-कभी धैर्य की परीक्षा होती है।

मुख्य बातें

- **सिंह लग्न में गुरु** — युवा और बलवान — आपका सबसे बड़ा जन्मजात उपहार है; बुद्धि, उदारता और प्रभावशाली वाणी इसी से आती है
- **वृश्चिक चंद्र** मन को गहरा और तीव्र बनाता है — भावनाएँ ऊपर से नहीं दिखतीं, पर भीतर बहुत प्रबल होती हैं
- **ज्येष्ठा नक्षत्र और राक्षस गण** — जिम्मेदारी उठाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति, और नियम से अधिक विवेक पर चलने का स्वभाव

• **गजकेसरी योग और वेशी योग** — यश और सत्यनिष्ठा का संयोग; लोग आपकी बात सुनते हैं और आपको याद रखते हैं
• जीवन में अर्थ खोजना आपकी सहज ज़रूरत है — जो काम आत्मा को न छुए, वह आपको टिकाए नहीं रखता

❖ ✦ ❖

बारह भावों का फल (भाव-चलित सहित)

अ ध्या य 3

बारह भावों का फल (भाव-चलित सहित)

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में बारह भाव मिलकर एक ऐसा चित्र बनाते हैं जहाँ **आत्मबल और सेवा-भाव बहुत ऊँचे हैं, पर धन-साझेदारी और व्यय के भाव थोड़ा अधिक दबाव माँगते हैं।** भाव-चलित में शुक्र का राशि-भाव 12 से चलित-भाव 11 में आ जाना एक महत्वपूर्ण बदलाव है — इसका असर आपके लाभ और सामाजिक जीवन पर पड़ता है, जिसे नीचे बताया जाएगा।

🦁 भाव 1 से 3 — आप, आपका परिवार और आपका साहस

लग्न (भाव 1 — सिंह) में गुरु विराजमान हैं — मित्र राशि में, युवा अवस्था में, षड्बल में भरपूर बल के साथ। यह बड़ा शुभ संयोग है। लग्नेश सूर्य भाव 11 में हैं और वेशी योग का भाग बन रहे हैं — यश व सत्यनिष्ठा का स्पष्ट संकेत। गजकेसरी योग भी यहीं से बनता है, जो समाज में आपकी पहचान को बल देता है। गुरु की दृष्टि भाव 5, 7 और 9 पर पड़ रही है — बुद्धि, साझेदारी और भाग्य तीनों पर उनका आशीर्वाद है।

भाव 2 (धन-वाणी-कुटुंब — कन्या) का स्वामी बुध भाव 12 में शत्रु राशि में बैठे हैं। भाव-बल अपेक्षाकृत कम है। इसका अर्थ यह है कि **धन कमाने की क्षमता आपके पास है, पर संचय और बचत पर ध्यान देना पड़ेगा।** वाणी में स्वाभाविक प्रतिभा है, पर कभी-कभी बोलने से पहले तौलना ज़रूरी है।

भाव 3 (साहस-भाई-पराक्रम — तुला) का स्वामी शुक्र भाव 12 में अस्त अवस्था में हैं। भाव-चलित में शुक्र यहाँ भाव 12 से 11 में आते हैं, इसलिए तृतीय भाव पर उनका प्रभाव और भी घटता है। मंगल की दृष्टि भाव 3 पर अवश्य है — जो साहस और भाई-बहन के सम्बंध को थोड़ा बल देती है। **आपमें पराक्रम है, पर छोटी यात्राओं व भाई-बहन के मामलों में अपेक्षाकृत कम सहजता रही होगी।**

🌊 भाव 4 से 6 — घर, बुद्धि और संघर्ष

भाव 4 (सुख-माता-भूमि — वृश्चिक) में चंद्र नीच राशि में हैं — बाल अवस्था में। चंद्र यहाँ नीच हैं, पर गजकेसरी योग के कारण केमद्रुम भंग हो गया है। मंगल (भाव 4 के स्वामी) भाव 9 में स्वराशि में बैठे हैं — यह शुभ है। **घर-सुख और माता के प्रति आपके मन में गहरा प्रेम है, पर कभी-कभी मन में एक अनकही उथल-पुथल रहती है।** चंद्र पर मंगल की दृष्टि भी है, जो मन को और संवेदनशील बनाती है।

भाव 5 (संतान-बुद्धि-विद्या — धनु) का स्वामी गुरु लग्न में विराजित हैं — युवा अवस्था, भरपूर बल। सूर्य की दृष्टि भाव 5 पर है, गुरु की दृष्टि भी है, और केतु की दृष्टि भी। राहु भाव 5 में बैठे हैं — वक्री। **बुद्धि तीव्र है, सोचने का ढंग गहरा है। संतान सुख में थोड़ा विलंब या विशेष परिस्थितियाँ हो सकती हैं।** राहु की उपस्थिति यहाँ मन को बड़े लक्ष्यों की ओर खींचती है, पर स्थिरता कभी-कभी चुनौती बनती है।

भाव 6 (रोग-शत्रु-ऋण — मकर) में शनि स्वराशि में, वक्री अवस्था में बैठे हैं — यह **हर्ष विपरीत राजयोग** बनाता है। **कठिनाइयों के बाद आपको अप्रत्याशित उन्नति मिलती है, शत्रु अंततः परास्त होते हैं।** शनि यहाँ भाव 8, 12 और 3 को देख रहे हैं। षड्बल में शनि का बल भरपूर है, यद्यपि अवस्था कुमार है — आधा फल। ऋण व प्रतिस्पर्धा के मोर्चे पर धैर्य आपका सबसे बड़ा हथियार है।

🪐 भाव 7 से 12 — साझेदारी, भाग्य, कर्म और व्यय

भाव 7 (विवाह-साझेदारी — कुम्भ) का स्वामी शनि भाव 6 में हैं — दुःस्थान में। भाव-बल यहाँ कम है और शोधित अष्टकवर्ग बिंदु भी केवल 3 हैं। गुरु की दृष्टि भाव 7 पर अवश्य है — जो साझेदारी को एक गहरी नैतिक ज़मीन देती है। केतु की दृष्टि भी भाव 7 पर है। **विवाह या दीर्घकालिक साझेदारी में जल्दबाज़ी से बचकर, समझ-बूझ से आगे बढ़ना आपके लिए अनुकूल रहता है।**

भाव 8 (आयु-गूढ़-बाधा — मीन) का स्वामी गुरु लग्न में हैं — यह दीर्घायु का शुभ संकेत है। शनि की दृष्टि भाव 8 पर है, जो सावधानी से जीवन जीने का संदेश देती है। आयु-बाधा की चिंता कम है।

भाव 9 (भाग्य-धर्म — मेष) में मंगल स्वराशि में बैठे हैं — **यह आपकी कुंडली का सबसे ऊर्जावान बिंदु है।** शोधित अष्टकवर्ग में 13 बिंदु — भाव 9 बहुत बलवान। गुरु की दृष्टि भी यहाँ पड़ रही है। **भाग्य आपका साथ देता है, और धर्म-नीति पर चलते रहने से जीवन के बड़े मोड़ अनुकूल रहते हैं।**

भाव 10 (कर्म-नौकरी-यश — वृषभ) का स्वामी शुक्र भाव 12 में अस्त हैं। भाव-बल यहाँ कम है और शोधित बिंदु भी केवल 3। चंद्र की दृष्टि भाव 10 पर है। **करियर में आपको अधिक परिश्रम से जो मिलता है, वह स्थायी होता है — एकाएक ऊँचाई की जगह धीमी पर पक्की प्रगति आपकी राह है।** दशमांश (D10) में लग्न कुम्भ है और मंगल भाव 11 में — इससे स्पष्ट होता है कि मेहनत का लाभ अंततः मिलता है।

भाव 11 (लाभ-इच्छापूर्ति — मिथुन) में सूर्य और केतु बैठे हैं। भाव-चलित में शुक्र भी यहाँ आते हैं — राशि-भाव 12 से चलित-भाव 11। **यह बहुत अच्छी स्थिति है — लाभ, इच्छापूर्ति और सामाजिक सम्बंधों पर शुक्र का प्रभाव आपको सौंदर्य-बोध, कला और व्यावहारिक लाभ दोनों देता है।** सूर्य यहाँ बलवान हैं — वेशी योग बनाते हुए।

भाव 12 (व्यय-एकांत-विदेश — कर्क) में बुध और शुक्र (राशि-भाव में) हैं। शनि की दृष्टि भी यहाँ पड़ती है। मंगल की दृष्टि भाव 12 पर है। **व्यय पर नियंत्रण रखना आवश्यक है, और कभी-कभी एकांत में जाकर मन को स्थिर करना आपके लिए पुनर्ऊर्जा का साधन बनता है।** विदेश-यात्रा या दूरस्थ स्थानों से लाभ की संभावना भी इस भाव से दिखती है।

मुख्य बातें

• **भाव 1 में गुरु और भाव 9 में मंगल** — व्यक्तित्व का ओज और भाग्य का बल, दोनों मिलकर आपको भीड़ से अलग बनाते हैं।
• **भाव 6 में शनि स्वराशि** — हर्ष विपरीत राजयोग से कठिनाई बाद में सफलता में बदलती है।
• **भाव-चलित में शुक्र का 12 से 11 में आना** — लाभ-भाव को और सबल बनाता है; सामाजिक व कल

❖ ✦ ❖

शिक्षा, करियर व धन-योग

अ ध्या य 4

शिक्षा, करियर व धन-योग

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में शिक्षा, करियर और धन — तीनों क्षेत्रों में **परिश्रम और धैर्य से मिलने वाली स्थायी सफलता** का संयोग है। लग्न में गुरु की उपस्थिति आपको स्वाभाविक बुद्धि देती है, और नवम भाव में स्वराशि मंगल भाग्य को बल देता है — पर इस कुंडली की सफलता शॉर्टकट से नहीं, श्रम की राह से आती है।

शिक्षा — बुद्धि भरपूर, राह थोड़ी उलझी

आपकी शिक्षा का प्रमुख भाव पंचम है, जिसके स्वामी गुरु लग्न में विराजमान हैं — मित्र राशि सिंह में, युवा अवस्था में, और षड्बल में 9.49 रूप के साथ। **यह अत्यंत शुभ स्थिति है** — गुरु का बल और अवस्था दोनों बेहतरीन हैं, जिसका अर्थ है कि बुद्धि, विश्लेषण क्षमता और विषयों को गहराई से समझने की शक्ति आपके पास स्वाभाविक रूप से है।

पर एक जटिलता भी है — बुध (वाणी, लेखन, गणना का कारक) बारहवें भाव में शत्रु राशि में बैठे हैं। विद्या के विस्तृत कारक गुरु और बुध के बीच यह तनाव बताता है कि **परीक्षाओं में प्रदर्शन कभी-कभी बुद्धि के अनुपात में कम रहा होगा** — जो जानते थे वह लिख नहीं पाए, या शब्दों में ढाल नहीं पाए। पाँचवें भाव पर सूर्य की दृष्टि पड़ रही है और गुरु की भी दृष्टि वहाँ है — इससे एकाग्रता व उच्च शिक्षा में मार्गदर्शन मिलता है। नवांश (D9) में गुरु कन्या लग्न में ही बैठे हैं — यह वर्गोत्तम स्थिति के करीब है, जो बताती है कि **बुद्धि का यह बल असली और गहरा है**, केवल ऊपरी नहीं।

करियर — विशेषज्ञता और स्वतंत्रता, यही आपकी दिशा

दशम भाव करियर का केंद्र है, जिसके स्वामी शुक्र बारहवें भाव में अस्त हैं। यह स्थिति बताती है कि **सामान्य नौकरी का ढाँचा आपको शायद सीमित महसूस कराता है**। दशमांश कुंडली (D10) में लग्न कुम्भ है और सूर्य पहले ही भाव में बैठे हैं — यह एक स्वतंत्र, नेतृत्व-भूमिका की ओर संकेत है। मंगल D10 में ग्यारहवें भाव में हैं — लाभ की स्थिति में — जो कहता है कि **तकनीकी, प्रबंधन, इंजीनियरिंग, कानून या किसी ऐसे क्षेत्र में जहाँ निर्णय लेने की शक्ति हो, आप सबसे अच्छा करते हैं।**

चंद्र कुंडली में गुरु दशम भाव में बैठे हैं — यह "गजकेसरी योग" का आधार भी है और करियर में प्रतिष्ठा व यश का प्रबल संकेत भी। दशम भाव पर चंद्र की दृष्टि पड़ रही है — मन और काम का यह जुड़ाव बताता है कि जब काम में रुचि हो, तब आपका प्रदर्शन असाधारण होता है; जब मन न लगे, तब साधारण।

हर्ष विपरीत राजयोग आपकी कुंडली में बन रहा है — षष्ठेश शनि छठे भाव में स्वराशि में हैं। परंपरा में इस योग का फल यह माना गया है कि कठिनाई के बाद अप्रत्याशित उन्नति मिलती है और शत्रु या प्रतिस्पर्धा में विजय होती है। **यह बड़ा बल है** — आपके विरोधी अंततः हार मानते हैं।

धन-योग — आय बनती है, पर खर्च और बाधा भी

धन का मुख्य भाव दूसरा है, जिसके स्वामी बुध बारहवें भाव में हैं — यह व्यय-स्थान है। एकादश भाव (लाभ) में सूर्य और केतु हैं; सूर्य की षड्बल में स्थिति भरपूर है पर अवस्था मृत है, इसलिए **लाभ का योग है पर फल कभी-कभी देर से और कम मात्रा में मिलता है।** एकादशेश बुध बारहवें भाव में होने से यह भी कहता है कि **आय का एक हिस्सा व्यय में जाता रहता है — बचत के लिए सचेत प्रयास ज़रूरी है।**

शुभ पक्ष यह है कि **वेशी योग** आपकी कुंडली में है — सूर्य के ठीक बाद के भाव में ग्रह हैं — जो यश, सत्यनिष्ठा और सामाजिक प्रतिष्ठा देता है। अष्टकवर्ग में नवम भाव के शोधित बिंदु 13 हैं — यह बहुत ऊँचा बल है, जो बताता है कि **भाग्य का साथ है और समय आने पर धन व अवसर दोनों आते हैं।** चतुर्थ भाव के शोधित बिंदु 15 हैं — स्थावर सम्पत्ति, घर या भूमि से भी लाभ संभव है।

अभी का समय — सूर्य–शनि अंतर्दशा (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027)

यह अंतर्दशा **श्रम और धैर्य की माँग करती है।** सूर्य महादशा में शनि की अंतर्दशा — और शनि का बल षड्बल में पर्याप्त (7.5 रूप) है, पर अवस्था कुमार है, यानी फल आधा मिलेगा। योगिनी में भद्रिका–सिद्धा चल रही है — **बुद्धि, वाणी और लेन-देन में गति का समय है**; शुक्र की सिद्धा योगिनी सुख और सिद्धि का संकेत देती है। यह मिश्रित इशारा है — करियर में काम होगा, पर परिणाम एकदम नहीं, धीरे-धीरे आएगा।

फ़रवरी 2027 से सूर्य–बुध अंतर्दशा आएगी — बुध वाणी, लेखन और व्यापार के कारक हैं। यह अवधि करियर में नए प्रस्ताव, संचार और लेन-देन के लिए बेहतर रहेगी। गोचर में गुरु अभी बारहवें भाव में हैं (कर्क राशि में, 31 अक्टूबर 2026 तक) — इस समय पर्दे के पीछे काम हो, तैयारी हो; **नवम्बर 2026 के बाद जब गुरु आगे बढ़ेंगे, तब अवसर खुलने की संभावना बढ़ेगी।**

मुख्य बातें

• **गुरु का लग्न में होना और नवम में मंगल** — यह संयोग बुद्धि, भाग्य और परिश्रम तीनों को एक साथ देता है; सफलता आती है, पर तत्काल नहीं।
• दशमांश में सूर्य का लग्न में होना **नेतृत्व और स्वतंत्र भूमिका** की ओर इशारा करता है — किसी के अधीन रहने पर आपकी पूरी क्षमता नहीं निकलती।
• हर्ष विपरीत राजयोग से **प्रतिस्पर्धा में अंततः विजय** मिलती है — हारिए मत, टिके रहिए।
• नवम भाव के अष्टकवर्ग बिंदु (13) बताते हैं कि **भाग्य का साथ है** — सही समय पर सही अवसर आएगा।
• बचत के लिए सचेत रहें — आय का प्रवाह बनता है, पर बुध की बारहवें में स्थिति से **व्यय पर निगरानी ज़रूरी है।**

❖ ✦ ❖

विवाह, परिवार व संतान विचार

अ ध्या य 5

विवाह, परिवार व संतान विचार

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में विवाह का भाव (सप्तम) शनि के स्वामित्व में है और शनि स्वयं छठे भाव में स्वराशि मकर में वक्री बैठे हैं। यह स्थिति बताती है कि विवाह और घर-परिवार का विषय आपके जीवन में **देर से, पर गहरे और टिकाऊ** रूप में आता है — जल्दबाज़ी यहाँ काम नहीं करती, धैर्य ही सबसे बड़ा उपाय है।

सप्तम भाव और विवाह की नींव

सप्तमेश शनि का छठे भाव में होना — यह हर्ष विपरीत राजयोग बनाता है, जो पहले के अध्याय में देखा था। विवाह में कुछ देरी या उलझन आ सकती है, पर **एक बार रिश्ता बनता है तो जीवन में स्थिरता और साझेदारी मज़बूत होती है।** शनि की दृष्टि आठवें, बारहवें और तीसरे भाव पर पड़ रही है — यह दर्शाता है कि जीवनसाथी के साथ संबंध में भावनात्मक गहराई होगी, पर कभी-कभी दूरी या व्यावहारिक तनाव भी आ सकता है।

शुक्र — विवाह के नैसर्गिक कारक — बारहवें भाव में कर्क राशि में अस्त हैं। इसका सीधा अर्थ है कि **विवाह में रोमांस या बाहरी चमक कम हो सकती है, पर ज़िम्मेदारी और निष्ठा अधिक रहेगी।** नवांश (D9) में शुक्र सिंह राशि के बारहवें भाव में हैं — यह पुष्टि करता है कि जीवनसाथी से रिश्ते में कुछ एकांत-भाव या "दूरी के बाद निकटता" का सिलसिला चलता रहेगा। मंगल की दृष्टि बारहवें भाव पर है, जहाँ शुक्र बैठे हैं — यह रिश्ते में कभी-कभी तीखापन या जल्दबाज़ी ला सकता है; इसे सँभालना ज़रूरी है।

जीवनसाथी का स्वभाव और रिश्ते की गुणवत्ता

सप्तम भाव कुम्भ राशि का है — जीवनसाथी विचारशील, थोड़े स्वतंत्र-स्वभाव के और व्यावहारिक होंगे। गुरु की दृष्टि सप्तम भाव पर सीधे पड़ रही है — **यह एक बड़ी राहत की बात है।** गुरु की यह दृष्टि विवाह को धर्म, विश्वास और आपसी सम्मान की नींव पर खड़ा करती है। भले ही शनि का अस्त शुक्र विवाह में देरी या जटिलता लाए, गुरु की दृष्टि यह सुनिश्चित करती है कि **रिश्ते में आत्मिक जुड़ाव और गुणात्मक गहराई बनी रहेगी।**

केतु की दृष्टि भी सप्तम पर है — इससे कभी-कभी जीवनसाथी के प्रति एक अजीब-सी अलगाव की भावना आ सकती है, या यह लग सकता है कि "कुछ कमी है।" यह केतु की प्रकृति है — वह हर रिश्ते में एक आध्यात्मिक खोज की माँग करता है। इसका उत्तर बाहर नहीं, भीतर की परिपक्वता में है।

संतान विचार

पंचम भाव धनु राशि का है, भावेश गुरु लग्न में बैठे हैं — **यह संतान के लिए अत्यंत शुभ योग है।** गुरु लग्न में मित्र राशि सिंह में युवा अवस्था में हैं, षड्बल 9.49 रूप है — पूरी ताक़त के साथ। सूर्य की दृष्टि पंचम पर है, और राहु और केतु की दृष्टि भी पंचम पर पड़ रही है। राहु की दृष्टि थोड़ी सावधानी माँगती है — **पहली संतान के समय थोड़ा धैर्य रखना पड़ सकता है, पर संतान का सुख और यश मिलता अवश्य है।**

नवांश (D9) में गुरु कन्या राशि के पहले भाव में हैं — यह वर्गोत्तम जैसी स्थिति नहीं है, पर गुरु का बल D9 में भी टिका हुआ है। सप्तमांश (D7) अलग से उपलब्ध नहीं है, पर D1 और D9 का मिलान संतान-सुख को पुष्ट करता है। पंचम भाव के शोधित अष्टकवर्ग में 5 बिंदु हैं — औसत बल, जो बताता है कि संतान का विषय प्रयास माँगेगा, पर मिलेगा ज़रूर।

वर्तमान समय और आने वाला दौर

अभी सूर्य महादशा में शनि अंतर्दशा चल रही है (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक)। शनि सप्तमेश भी हैं और छठे भाव में वक्री हैं — यह अवधि विवाह के लिए **निर्णय की नहीं, तैयारी की है।** गोचर में शनि मीन राशि के आठवें भाव में वक्री हैं — यह घर-परिवार के मामलों में थोड़ी धीमी गति देता है।

फ़रवरी 2027 से सूर्य-बुध अंतर्दशा आएगी — बुध बारहवें भाव में हैं, पर बुध की अंतर्दशा में वार्तालाप, समझौते और रिश्तों की बातचीत में गति आती है। **अप्रैल 2029 में चंद्र महादशा आरंभ होगी** — तब आप लगभग 37 वर्ष के होंगे — और चंद्र महादशा घर, परिवार और भावनात्मक स्थिरता का दौर लाती है; उस समय पारिवारिक जीवन में मधुरता और संतान-सुख अधिक मिल सकता है।

मुख्य बातें

- **सप्तमेश शनि का छठे में होना** विवाह में देरी या व्यावहारिक जटिलता दे सकता है, पर रिश्ता एक बार बने तो टिकाऊ होता है

- **गुरु की सप्तम पर दृष्टि** विवाह में नैतिकता, विश्वास और गहराई बनाए रखती है — यह सबसे बड़ी शक्ति है
- **शुक्र अस्त और बारहवें में** — रोमांस से अधिक ज़िम्मेदारी और निष्ठा विवाह की नींव बनेगी
- **पंचम में गुरु का बलवान स्वामित्व** संतान-सुख देता है, राहु की दृष्टि थोड़ा धैर्य माँगती है
- **अप्रैल 2029 से चंद्र महादशा** — परिवार व संतान के लिए सबसे अनुकूल दौर आरंभ होगा; अभी का समय नींव बनाने का है

❖ ✦ ❖

स्वास्थ्य व आयुर्विचार

अ ध्या य 6

स्वास्थ्य व आयुर्विचार

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में स्वास्थ्य का चित्र मिला-जुला है — एक ओर लग्न में गुरु की बलिष्ठ उपस्थिति आपको जीवनीशक्ति देती है, दूसरी ओर बुध व शुक्र का बारहवें भाव में होना और चंद्र का नीच राशि में होना यह बताता है कि शरीर से अधिक **मन ही आपका सबसे बड़ा स्वास्थ्य-शत्रु है।**

लग्न व आयुर्बल — गुरु का आशीर्वाद

सिंह लग्न स्वयं एक बलवान व स्थिर लग्न है, और उस पर गुरु का लग्न में विराजमान होना — जो नवांश में भी कन्या लग्न में आ रहे हैं — यह आपकी आयु व शरीर की मूल नींव को मज़बूत करता है। षड्बल में गुरु सबसे अधिक बली हैं (9.49 रूप) और युवा अवस्था में हैं, अर्थात् लग्न-भाव की रक्षा पूरी तरह हो रही है। **शरीर में ऊर्जा और रोग-प्रतिरोध की क्षमता आपमें औसत से अधिक है।** गुरु की दृष्टि पंचम, सप्तम और नवम भाव पर भी पड़ रही है — यह मन, संतान-सुख और भाग्य तीनों को एक धागे में पिरोती है।

कमज़ोर कड़ियाँ — कहाँ ध्यान चाहिए

चंद्र आपकी कुंडली में चतुर्थ भाव में नीच राशि (वृश्चिक) में हैं और बाल अवस्था में हैं — फल केवल चौथाई। चंद्र मन, नींद, पाचन और रोग-प्रतिरोध का कारक है। इनका नीच होना यह संकेत देता है कि **नींद की गड़बड़ी, चिड़चिड़ापन, और भावनात्मक थकान** — ये शारीरिक बीमारी से पहले आने वाले संकेत हैं। जब भी कोई बड़ा तनाव आए, शरीर पेट, छाती या गले से बोलने लगता है।

बुध और शुक्र दोनों बारहवें भाव में शत्रु राशि में हैं — बुध का संबंध नाड़ी-तंत्र से है, शुक्र का गुर्दे व जल-तत्व से। इनका बारहवें में होना अस्पताल या एकांत-विश्राम से जोड़ता है, पर शनि जो अपनी राशि में छठे भाव में हैं, वे **हर्ष विपरीत राजयोग** बनाते हैं — कठिनाई के बाद उबरने की असाधारण क्षमता आपमें है। शनि की अवस्था कुमार है, तो यह शक्ति धीरे-धीरे विकसित हो रही है।

मंगल नवम भाव में स्वराशि में हैं, पर अवस्था मृत है — इसलिए उनका बारहवें भाव पर जो दृष्टि है, वह कुछ कमज़ोर है। **रक्त, पित्त और**

ऊर्जा से जुड़े विषयों में सावधानी उचित है।

वर्तमान समय — दशा व गोचर का संदेश

अभी सूर्य महादशा में शनि की अंतर्दशा चल रही है (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027)। शनि छठे भाव के स्वामी हैं और गोचर में अष्टम भाव (मीन, वक्री) में विराजमान हैं — यह दशा शरीर की पुरानी थकान, हड्डी, जोड़ और पाचन-तंत्र को थोड़ा दबाव में रख सकती है। **अभी आराम को आलस्य मत समझिए — यह शरीर का माँगा हुआ समय है।**

गोचर में गुरु अभी बारहवें भाव (कर्क) में हैं और दिसम्बर 2026 में वक्री होंगे। बारहवाँ भाव अस्पताल, एकांत व व्यय का है — पर गुरु की दृष्टि छठे भाव पर भी पड़ रही है (चंद्र कुंडली से नौवें में गुरु)। यह बताता है कि **फ़रवरी 2027 से बुध की अंतर्दशा आने तक** शरीर को अतिरिक्त देखभाल और पर्याप्त नींद की ज़रूरत है।

शनि का गोचर-दृष्टि अष्टम भाव, बारहवें और तीसरे पर पड़ रही है — तीसरा भाव पराक्रम और कंधे-भुजाओं से जुड़ा है। **कंधे, पीठ और आँखों पर ध्यान दीजिए।**

मुख्य बातें

• **गुरु का लग्न में होना** आपकी आयु और जीवनीशक्ति का सबसे बड़ा रक्षक है — यह योग दीर्घायु का संकेत देता है।
• **नीच चंद्र** बताता है कि तनाव और नींद की गड़बड़ी ही अधिकांश शारीरिक परेशानियों की जड़ है — मन को सँभालिए, शरीर अपने-आप सँभलेगा।
• **फ़रवरी 2027 तक** का समय विशेष देखभाल माँगता है — थकान को नज़रअंदाज़ न करें, नियमित दिनचर्या रखें।
• रोज़ सुबह 20-25 मिनट तेज़ चलना या योग — यह चंद्र व मंगल दोनों के लिए सबसे सरल और कारगर उपाय है; शनि समय का पाबंद माँगते हैं, इसलिए इसे नागा मत होने दीजिए।
• **किसी भी शारीरिक संकेत की अनदेखी न करें** — ज्योतिष दिशा देता है, निदान चिकित्सक करते हैं; समय पर जाँच कराना सबसे बड़ा उपाय है।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

एकोऽपि ज्ञार्यशुक्राणां लग्नात् केन्द्रगतो यदि ।
अरिष्टं निखिलं हन्ति तिमिरं भास्करो यथा ॥

बुध, गुरु या शुक्र में से एक भी लग्न से केन्द्र में हो, तो वह सारे अरिष्ट को वैसे मिटा देता है जैसे सूर्य अंधकार को।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय १०

❖ ✦ ❖

दशा-फल — पिछले 10 वर्ष से आगामी 15 वर्ष तक

अ ध्या य 7

दशा-फल — पिछले 10 वर्ष से आगामी 15 वर्ष तक

अभय शर्मा जी, आपके जीवन का यह खंड — 2016 से 2041 तक — एक बड़ी यात्रा है जिसमें तीन महादशाओं का स्वाद है: शुक्र की लंबी परिपक्वता, सूर्य की अग्नि-परीक्षा, और चंद्र का भावनात्मक उभार। जो बीता वह नींव बना, जो अभी चल रहा है वह कसौटी है, और जो आने वाला है वह फसल।

शुक्र महादशा — फ़रवरी 2016 से अप्रैल 2023

शनि अंतर्दशा — फ़रवरी 2016 से अप्रैल 2019 (आयु लगभग 23-27 वर्ष)

यह दौर आपके जीवन में **धीमी लेकिन ज़रूरी पक्कापन** का था। शुक्र आपके दशम भाव के स्वामी हैं — यानी करियर के कारक — लेकिन वे बारहवें भाव में अस्त अवस्था में हैं और षड्बल में अवस्था मृत है। इसका अर्थ यह नहीं कि काम नहीं मिला, बल्कि यह कि **जो काम मिला वह भीतर से संतुष्ट नहीं करता था** — मेहनत लगती थी, पर परिणाम आधे-अधूरे रहते थे।

शनि अंतर्दशा में शनि अपने ही छठे भाव में स्वराशि में बैठे हैं — यह हर्ष विपरीत राजयोग का स्वामी है। तो इस अवधि में एक विचित्र खिंचाव रहा होगा: **कठिनाइयाँ थीं, पर उन्हीं से रास्ता भी निकलता था।** रोज़गार का कोई ढर्रा बना, शायद नौकरी बदली हो, या पहली बार किसी बड़ी ज़िम्मेदारी का बोझ उठाया हो। धन का प्रवाह अनियमित रहा होगा, पर रुका नहीं।

स्वास्थ्य में पेट, पाचन या हड्डी-जोड़ से जुड़ी कोई छोटी तकलीफ़ आई होगी — शनि छठे भाव से आठवें को देखते हैं, और अवस्था कुमार होने से फल आधा था।

बुध अंतर्दशा — अप्रैल 2019 से फ़रवरी 2022 (आयु लगभग 27-30 वर्ष)

बुध आपके बारहवें भाव में शत्रु राशि में हैं — एकादशेश (लाभेश) भी वही बुध हैं। **लाभ का स्वामी व्यय-भाव में बैठा हो तो लाभ होता ज़रूर है, पर उससे अधिक ख़र्च भी होता है।** इस अंतर्दशा में धन आया होगा, किसी प्रकल्प में बुद्धि लगी होगी — पर खर्च उससे आगे निकल गया। शायद कोई निवेश किया, कोई उधार लिया, या कोई बड़ा फ़ैसला जिसका परिणाम लंबे समय तक असर करता रहा।

मन में इस दौरान बहुत हलचल रही होगी — बुध की अवस्था कुमार है, तो बुद्धि बनती जा रही थी, लेकिन अनुभव कच्चा था। नई दिशा की तलाश, शायद कोई व्यापार का विचार, कोई नई पढ़ाई या नई जगह जाने का मन। योगिनी दृष्टि से भद्रिका (बुध-स्वामी) 2024 में आई — पर इस अंतर्दशा में बुध अभी भी अपनी शक्ति जमा कर रहे थे।

केतु अंतर्दशा — फ़रवरी 2022 से अप्रैल 2023 (आयु लगभग 30-31 वर्ष)

केतु पंचम व एकादश भावों के संधि पर ग्यारहवें भाव में हैं। केतु की अंतर्दशा प्रायः भीतर की ओर ले जाती है — **बाहर की भाग-दौड़ कम होती है, भीतर का विचार तेज़ होता है।** इस छोटी-सी अवधि (14 महीने) में शायद आपने यह महसूस किया हो कि जो रास्ता अब तक चुना था, वह आपका अपना है या नहीं। कोई पुराना सम्बंध या काम अचानक छूट गया हो, या मन ने विराम माँगा हो।

यह शुक्र महादशा का अंत था — और हर महादशा के अंत में वह ग्रह अपना हिसाब बराबर करता है। जो बाकी था, वह इस दौर में पूरा हुआ।

सूर्य महादशा — अप्रैल 2023 से अप्रैल 2029

परिचय — यह दशा क्या माँगती है

सूर्य आपके लग्नेश नहीं हैं — लग्न सिंह का, लग्नेश सूर्य ग्यारहवें भाव में मिथुन राशि में बैठे हैं। **सूर्य का षड्बल भरपूर (9.86 रूप, न्यूनतम 5) है — पर अवस्था मृत है।** यह एक बड़ा अंतर्विरोध है: बल है, पर फल देने की शक्ति क्षीण है। इसका अर्थ यह है कि **इस दशा में आप बहुत मेहनत करते हैं, पर परिणाम उस मेहनत के अनुपात में नहीं आता।** आत्मविश्वास की कमी, पिता या बड़ों से मतभेद, और मान-प्रतिष्ठा का प्रश्न इस पूरी दशा का केंद्र है।

सूर्य वेशी योग में हैं — उनके बाद के भाव में ग्रह हैं — जो सत्यनिष्ठा व परोपकार की प्रवृत्ति देता है। साथ ही सूर्य पर केतु की वक्री दृष्टि (जन्म-कुंडली में) सूर्य-ग्रहण दोष बनाती है।

सूर्य–गुरु अंतर्दशा — मई 2025 से फ़रवरी 2026 (आयु लगभग 33-34 वर्ष)

यह अंतर्दशा अभी-अभी बीती है। गुरु लग्न में बैठे हैं, बलवान (9.49 रूप, अवस्था युवा) — **गुरु की अंतर्दशा में यश, विद्या और किसी बड़े अवसर का द्वार खुलता है।** पाँचवें भाव पर गुरु की दृष्टि है — बुद्धि तीक्ष्ण थी। साथ में गजकेसरी योग (चंद्र से केंद्र में गुरु) सक्रिय

हुआ।

इस अवधि में कोई अच्छी योजना बनी होगी, कोई बड़ा निर्णय लिया होगा — **अप्रैल 2025 के बाद गुरु कर्क राशि में आए जो बारहवें भाव में गोचर कर रहे हैं** — यानी फल आया पर दिखा कम, ख़र्च या एकांत बढ़ा। पर गुरु की दृष्टि भाग्य-भाव (नवम) पर बनी रही।

सूर्य–शनि अंतर्दशा — फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 (अभी चल रही है — आयु 34-35 वर्ष)

यह इस पूरी सूर्य महादशा का सबसे कसौटी वाला पड़ाव है।

सूर्य और शनि नैसर्गिक शत्रु हैं — पिता और पुत्र का द्वंद्व, अहं और अनुशासन का टकराव। सूर्य ग्यारहवें भाव में, शनि छठे भाव में। दोनों के अपने-अपने स्थान तो अच्छे हैं, पर एक साथ आएँ तो घर्षण बनता है।

काम-धंधे में: शनि छठे भाव के स्वामी हैं — सेवा, प्रतिस्पर्धा, ऋण, और रोज़ की मेहनत उनका क्षेत्र है। इस दौर में काम का बोझ बढ़ा होगा, कोई पुरानी बाधा वापस आई होगी, या किसी सहकर्मी/प्रतियोगी से घर्षण हुआ होगा। पर शनि हर्ष विपरीत राजयोग के स्वामी हैं — **इसी कठिनाई के भीतर से एक अप्रत्याशित अवसर निकलेगा।** धैर्य ही इस समय की सबसे बड़ी पूँजी है।

गोचर का सहयोग: गोचर में शनि मीन राशि (आठवें भाव में, वक्री) हैं — जो एक दबाव बनाते हैं। पर चंद्र राशि वृश्चिक से शनि पाँचवें भाव में हैं — न साढ़ेसाती, न ढैया — यह राहत की बात है।

योगिनी मिलान: विंशोत्तरी में शनि अंतर्दशा चल रही है और अंतर-योगिनी भद्रिका-सिद्धा (शुक्र, फ़रवरी 2027 तक) है। दोनों पद्धतियाँ अलग-अलग इशारा कर रही हैं — संकेत मिश्रित है। इसलिए इस समय को न बहुत उत्सव का, न बहुत संकट का मानें — **यह धीरे-धीरे आगे बढ़ने का समय है।**

स्वास्थ्य: शनि की दृष्टि इस समय आठवें और बारहवें भाव पर है — नींद, थकान, पाचन या कमर-घुटने का ध्यान रखें। कोई पुरानी तकलीफ़ उभर सकती है। नियमित दिनचर्या इस दौर का सबसे बड़ा उपाय है।

फ़रवरी 2027 तक: धैर्य रखिए। यह समय परीक्षा का है, सज़ा का नहीं।

सूर्य–बुध अंतर्दशा — फ़रवरी 2027 से दिसम्बर 2027 (आयु 35 वर्ष)

बुध बारहवें भाव में शत्रु राशि में हैं, एकादशेश भी वही। **यह अंतर्दशा बुद्धि व वाणी की गतिविधि लाएगी** — लेखन, संवाद, व्यापार, या कोई नई योजना का ताना-बाना। परंतु बुध की अवस्था कुमार और राशि शत्रु की है, इसलिए **परिणाम धीरे आएँगे।**

इस अवधि में किसी दस्तावेज़, अनुबंध, या संवाद में सावधानी बरतें — बुध बारहवें भाव से विदेश या दूरस्थ व्यापार का भी संकेत देते हैं।

शायद कोई नई दिशा का द्वार इसी समय खुले।

सूर्य–केतु अंतर्दशा — दिसम्बर 2027 से अप्रैल 2028 (आयु 35-36 वर्ष)

केतु ग्यारहवें भाव में — लाभ-भाव का अतिथि। **यह छोटी-सी अंतर्दशा अचानक कोई मोड़ ला सकती है** — पुराना छूटे या नया जुड़े। मन आध्यात्मिक रंग की ओर जाएगा। कोई पुराना काम जो अटका था, अचानक पूरा हो सकता है — पर नया काम शुरू करना इस समय में कठिन रहेगा।

सूर्य–शुक्र अंतर्दशा — अप्रैल 2028 से अप्रैल 2029 (आयु 36-37 वर्ष)

शुक्र दशमेश हैं — करियर के स्वामी। पर वे बारहवें भाव में अस्त हैं, अवस्था मृत है। **यह अंतर्दशा करियर में कुछ नई गतिविधि तो लाएगी** — शायद नया प्रस्ताव, नई जगह, नई भूमिका — **पर फल उतना नहीं मिलेगा जितनी अपेक्षा होगी।**

घर, सुख-सुविधा, जीवनसाथी के सम्बंध में कुछ सुधार की संभावना है — शुक्र का यह भी पक्ष है। रिश्तों में कोमलता लाने का, आपसी समझ बढ़ाने का यह समय उपयुक्त है।

चंद्र महादशा — अप्रैल 2029 से अप्रैल 2039 (आयु 37-47 वर्ष)

यह दशा क्यों विशेष है

चंद्र आपकी कुंडली में नीच राशि (वृश्चिक) में चौथे भाव में हैं। चतुर्थेश मंगल नवम भाव में स्वराशि में हैं — यह एक शुभ योग है। पर चंद्र की अवस्था बाल है — **फल चौथाई मिलेगा, पर वह चौथाई भी बहुत महत्वपूर्ण होगा।**

चंद्र महादशा मन, घर, माता और भावनात्मक जीवन पर केंद्रित होती है। आपके लिए यह दशा **घर और मन — दोनों को एक साथ सँभालने की परीक्षा होगी।**

गजकेसरी योग (चंद्र से केंद्र में गुरु — दशम भाव में) इस पूरी महादशा में सक्रिय रहेगा — **यश, सामाजिक पहचान और करियर में स्थिरता इसी योग से मिलेगी।**

चंद्र–चंद्र अंतर्दशा — अप्रैल 2029 से दिसम्बर 2029 (आयु 37 वर्ष)

महादशा का आरम्भ — मन का आईना। इस अंतर्दशा में भावनाएँ तीव्र होंगी — घर, परिवार, माता, या कोई पुराना सम्बंध केंद्र में आएगा। चंद्र नीच राशि में हैं, इसलिए **मन उदास या अस्थिर रह सकता है — पर चंद्र कुंडली में गुरु दशम भाव में हैं, जो बाहरी स्थिरता देते हैं।** सोने-जागने का समय पक्का रखें — यह इस अंतर्दशा का सबसे बड़ा उपाय है।

चंद्र–मंगल, चंद्र–राहु, चंद्र–गुरु अंतर्दशाएँ — दिसम्बर 2029 से लगभग 2033

मंगल अंतर्दशा (दिसम्बर 2029 – जुलाई 2030): मंगल भाग्य-भाव के स्वामी हैं, स्वराशि में — यह छोटी पर बलवान अंतर्दशा है। **काम में गति आएगी, कोई बड़ा निर्णय लेने की शक्ति मिलेगी।** भूमि, वाहन, या घर से जुड़ा कोई सकारात्मक निर्णय संभव है।

राहु अंतर्दशा (जुलाई 2030 – जनवरी 2032): राहु पाँचवें भाव में वक्री हैं। **यह अंतर्दशा अचानक बड़े बदलाव, नई दिशा और अप्रत्याशित अवसर का समय है।** पर भ्रम और अनिश्चितता भी रहेगी — बड़े निर्णय सोच-समझकर लें। राहु पर सूर्य की दृष्टि है — आत्मविश्वास बनाए रखें।

गुरु अंतर्दशा (जनवरी 2032 – जुलाई 2033) — आयु लगभग 40 वर्ष: यह इस पूरी चंद्र महादशा का सबसे शुभ पड़ाव है। गुरु लग्न में बलवान, अवस्था युवा, गजकेसरी योग का स्वामी। करियर में उन्नति, धन में वृद्धि, संतान सुख या कोई बड़ी उपलब्धि — ये इस अंतर्दशा की विशेषता है। भाग्य-भाव (नवम) पर गुरु की दृष्टि भी है। **यह समय आपके जीवन की एक बड़ी छलाँग का हो सकता है।**

चंद्र–शनि, चंद्र–बुध, चंद्र–केतु, चंद्र–शुक्र अंतर्दशाएँ — 2033 से 2039

शनि अंतर्दशा (जुलाई 2033 – जनवरी 2036) — आयु 41-44 वर्ष: फिर एक बार शनि — जो इस कुंडली में हर्ष विपरीत राजयोग के स्वामी हैं। **काम में बोझ बढ़ेगा, पर उन्नति भी इसी परिश्रम से आएगी।** यह वह समय है जब आप किसी बड़ी ज़िम्मेदारी के केंद्र में होंगे — परिवार का, काम का, या समाज का। धैर्य रखें; शनि की दशा में जो बनता है वह टिकाऊ होता है।

बुध अंतर्दशा (जनवरी 2036 – नवम्बर 2037) — आयु 44-45 वर्ष: व्यापार, लेखन, संवाद या किसी बौद्धिक काम में गतिविधि। बुध की अवस्था कुमार — धीरे-धीरे, पर ठोस रास्ता बनेगा।

केतु और शुक्र अंतर्दशाएँ (2037-2039) — आयु 45-47 वर्ष: केतु की अंतर्दशा फिर एकांत और आध्यात्मिक झुकाव लाएगी। शुक्र की अंतर्दशा में घर-परिवार और सुख-साधन की ओर ध्यान जाएगा — **पर चंद्र महादशा का अंत एक बड़े परिवर्तन की तैयारी भी है जो 2039 के बाद की महादशा करेगी।**

मुख्य बातें

• **2016-2023 (शुक्र महादशा):** नींव बनाने का समय — मेहनत अधिक, फल देर से। शनि अंतर्दशा में कठिनाई पर हर्ष विपरीत राजयोग ने रास्ता दिया; बुध अंतर्दशा में बुद्धि तेज़ हुई, पर खर्च भी।

• **2026-2027 (सूर्य–शनि — अभी):** यह सबसे कसौटी का पड़ाव है — धैर्य, नियमित दिनचर्या और शॉर्टकट से दूरी ही इस समय का असली उपाय है। फ़रवरी 2027 के बाद राहत शुरू होगी।

• **2029 के बाद (चंद्र महादशा):** घर, मन और यश — तीनों एक साथ। **जनवरी 2032 से जुलाई 2033 का गुरु अंतर्दशा वाला समय आपके जीवन का एक स्वर्णिम पड़ाव हो सकता है।**

• **मंगल भाग्य-भाव में स्वराशि** — यह इस पूरी यात्रा में एक स्थिर आधार है: साहस और भाग्य आपके साथ हैं, बस धैर्य चाहिए।

• **गजकेसरी योग** चंद्र महादशा में पूरी तरह जागेगा — समाज में नाम, बुद्धि का सम्मान और सामाजिक प्रतिष्ठा इसी काल में अपने शिखर पर होगी।

❖ ✦ ❖

दोष-विचार व शांति (गण्डमूल · मांगलिक · कालसर्प · साढ़ेसाती)

अ ध्या य 8

दोष-विचार व शांति

गण्डमूल · मांगलिक · कालसर्प · साढ़ेसाती

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली को जब दोषों की कसौटी पर रखा तो एक राहत की बात सामने आई — **जितने दोष लोग आपको बता चुके होंगे, उनमें से अधिकांश आपकी कुंडली में वास्तव में हैं ही नहीं।** जो एक दोष है, उसका भी सरल परिहार है और उसकी चिंता करने की कोई बड़ी वजह नहीं।

गण्डमूल — है, पर घबराने की नहीं

आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र में हुआ है। ज्येष्ठा छह गण्डमूल नक्षत्रों में से एक है। शास्त्र में इन नक्षत्रों के लिए जन्म के बाद मूल-शांति का विधान है — यह कोई दंड नहीं, एक सावधानी है।

परंपरा में यह माना गया है कि ज्येष्ठा नक्षत्र के जातक में नेतृत्व की प्रबल इच्छा होती है, पर साथ में अहं का टकराव भी — विशेषकर बड़े भाई या परिवार के मुखिया के साथ। **यदि जन्म के समय मूल-शांति नहीं हुई थी, तो अब भी कराई जा सकती है** — एक सरल हवन, जिसमें नक्षत्र-देवता इंद्र व मित्र का पूजन हो। यह किसी भी शुभ मंगलवार या रविवार को किया जा सकता है। इससे मन में एक स्थिरता आती है और पारिवारिक सम्बंधों में सहजता बढ़ती है। इसे टालते रहना उचित नहीं, पर इसके बिना जीवन रुकता भी नहीं — यह संतुलन समझना ज़रूरी है।

मांगलिक दोष — नहीं है

यह बात स्पष्ट व आश्वस्त करने वाली है — **आपकी कुंडली में मांगलिक दोष नहीं है।** शुद्ध गणना से यह पुष्टि हो चुकी है।

मंगल आपके नवम भाव में अपनी स्वराशि मेष में विराजमान हैं — यह एक बलवान और शुभ स्थिति है। नवम भाव धर्म, भाग्य और पिता का घर है। यहाँ स्वराशि का मंगल आपको साहस, दिशा और दृढ़ता देता है, वैवाहिक जीवन में बाधा नहीं। जो लोग आपको मांगलिक बताएँ, उनसे निःसंकोच यह गणना दिखाएँ।

मंगल की दृष्टि भाव 12, भाव 3 और भाव 4 पर पड़ती है — यह अलग विषय है जो व्यक्तित्व व स्वास्थ्य अध्यायों में देखा जा चुका है। विवाह के सन्दर्भ में **मांगलिक दोष का प्रश्न यहाँ पूर्णतः निराधार है।**

कालसर्प दोष — नहीं है

यह भी एक महत्वपूर्ण स्पष्टीकरण है। देखने में लग सकता है कि कई ग्रह राहु-केतु की धुरी के एक ओर हैं — और इसीलिए कई ज्योतिषी बिना अंश देखे कालसर्प दोष बता देते हैं। पर **शुद्ध अंश-गणना से मंगल और शनि राहु-केतु की धुरी के पार निकल चुके हैं।** शास्त्रीय नियम स्पष्ट है — एक भी ग्रह घेरे के बाहर हो, तो योग भंग हो जाता है।

इसलिए **आपकी कुंडली में कालसर्प दोष नहीं है।** न कोई विशेष पूजा इसके लिए आवश्यक है, न कोई रत्न, न कोई महँगा कर्मकांड। यदि किसी ने यह दोष बताकर भय दिखाया हो, तो वह गणना की जल्दबाज़ी थी, सच्चाई नहीं।

साढ़ेसाती व ढैया — इस समय नहीं

आपकी जन्म चंद्र राशि वृश्चिक है। गोचर में शनि इस समय मीन राशि में हैं — यह वृश्चिक से पाँचवाँ भाव है। **न साढ़ेसाती चल रही है, न ढैया।** यह राहत की बात है।

साढ़ेसाती तब होती है जब शनि जन्म चंद्र राशि से एक पहले, उस पर, या एक बाद की राशि में हों। वृश्चिक के लिए वह तुला, वृश्चिक और धनु में होती। शनि मीन में हैं — वहाँ से बहुत दूर। अगली बार साढ़ेसाती तब आएगी जब शनि तुला राशि में प्रवेश करेंगे — वह समय अभी कई वर्ष दूर है।

अभी शनि की अंतर्दशा फ़रवरी 2027 तक चल रही है और शनि आठवें भाव में गोचर कर रहे हैं — यह अपने आप में एक सँभलकर चलने का समय है, पर साढ़ेसाती का बोझ इसमें नहीं जुड़ रहा।

मुख्य बातें

• **गण्डमूल (ज्येष्ठा) है — मूल-शांति करवा लें**, किसी भी शुभ रविवार या मंगलवार को; यह सरल है और मन को स्थिरता देता है
• **मांगलिक दोष नहीं है** — मंगल स्वराशि नवम भाव में हैं, विवाह में कोई बाधा इस दोष से नहीं
• **कालसर्प दोष नहीं है** — मंगल व शनि अंश-गणना से राहु-केतु के घेरे के बाहर हैं; जो यह बताए वह गणना देखे बिना कह रहा है
• **साढ़ेसाती और ढैया — दोनों इस समय नहीं**, शनि वृश्चिक से पाँचवें भाव में हैं
• तीन बड़े दोष न होना आपकी कुंडली की एक विशेष शक्ति है — इस पर भरोसा रखिए और जो भय दिखाए जाएँ उन्हें गणना से परखिए

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।
एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४

❖ ✦ ❖

रत्न, इष्ट, मंत्र, दान व उपाय

अ ध्या य 9

रत्न, इष्ट, मंत्र, दान व उपाय

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में गुरु लग्न में बैठकर आपको एक स्वाभाविक सुरक्षा-कवच देते हैं — पर इस समय सूर्य महादशा में शनि अंतर्दशा चल रही है, और यह संयोग माँग करता है कि उपाय सोचे-समझे हों, बिखरे नहीं।

💎 रत्न — अभी क्या पहनें

माणिक इस समय आपके लिए सबसे उपयुक्त रत्न है — और यह संयोग ध्यान देने योग्य है कि यह आपका जीवन-रत्न भी है, और इस समय आपकी महादशा के स्वामी (सूर्य) का रत्न भी।

सूर्य आपके लग्नेश नहीं हैं, पर भाव 11 में बैठकर लाभ व सामाजिक उपस्थिति के स्वामी हैं। अभी सूर्य की महादशा चल रही है — इस दौरान उन्हें बल देना सीधे आपके आत्मविश्वास, कार्यक्षेत्र में पहचान और निर्णय-शक्ति को मज़बूत करता है। साथ ही, कुंडली में **सूर्य-ग्रहण दोष** है (केतु की युति भाव 11 में) — माणिक इस दोष के प्रभाव को नरम करने में भी सहायक है।
• **रत्न:** माणिक (Ruby), कम से कम 5-7 रत्ती

- **धातु:** सोना
- **अँगुली:** अनामिका (दाएँ हाथ की)
- **दिन:** रविवार सुबह, सूर्योदय के बाद
- **मंत्र:** धारण करते समय "ॐ सूर्याय नमः" 108 बार

मोती, नीलम और हीरा इस कुंडली में **वर्जित** हैं — कारण ऊपर के अध्यायों में आ चुका है। पन्ना भी अभी अनुकूल नहीं।

चाहें तो koustubhgems.com से प्रमाणित माणिक ले सकते हैं — 1997 से धर्मशाला में, GJEPC से जुड़े, हर रत्न प्रयोगशाला-प्रमाणित।

🪔 इष्ट — आपका स्वाभाविक देव

सिंह लग्न, सूर्य महादशा और लग्न में गुरु — इन तीनों का संगम **भगवान विष्णु या उनके अवतारों** की ओर इशारा करता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के स्वामी बुध हैं और यह नक्षत्र **इंद्र** (या ज्येष्ठा देवी) से जुड़ा है — इसलिए **हनुमान जी की उपासना** भी आपके लिए विशेष फलदायी है। राक्षस गण (अवकहड़ा) वाले जातकों के लिए शक्ति-साधना और निडरता की देवी का आशीर्वाद भी सहज आता है।

सरल निर्णय: रोज़ सुबह भगवान विष्णु का या हनुमान जी का एक पल स्मरण — लंबी पूजा की ज़रूरत नहीं, मन का जुड़ाव ज़रूरी है।

🔱 मंत्र — कौन-सा, कितना

इस समय **दो मंत्र** आपके काम के हैं:

1. सूर्य मंत्र (महादशा के लिए):
ॐ घृणि सूर्याय नमः
रविवार को सूर्योदय के समय, 108 बार — पानी में सूर्य का प्रतिबिंब देखते हुए या धूप में बैठकर।

2. गुरु मंत्र (लग्न-रक्षा के लिए):
ॐ बृं बृहस्पतये नमः
गुरुवार को 108 बार — गुरु लग्न में बैठे हैं, उनकी रक्षा को बनाए रखना आपके सम्पूर्ण जीवन के लिए महत्वपूर्ण है।

दोनों मंत्र रोज़ नहीं करने हों तो सप्ताह में एक-एक दिन भी पर्याप्त है — पर नियमित रहें।

🌿 दान — किसका, कब

• **सूर्य के लिए (रविवार):** गुड़, लाल फूल, गेहूँ — किसी ज़रूरतमंद को या मंदिर में। ताँबे का बर्तन दान करना विशेष शुभ।
• **शनि के लिए (शनिवार — चल रही अंतर्दशा):** काली उड़द, सरसों तेल, काला कंबल — किसी वृद्ध, मज़दूर या ग़रीब को सच्चे मन से। यह दान **दिखावे के बिना** हो — शनि सच्चाई देखते हैं, आडंबर नहीं।
• **गुरु के लिए (गुरुवार):** पीली दाल (चना दाल), हल्दी, केला — किसी ब्राह्मण, गुरु या विद्यार्थी को।

🧭 दिनचर्या — यही सबसे बड़ा उपाय है

रत्न और मंत्र बाद में आते हैं — **जीवनशैली ही पहला उपाय है:**
• **सूर्य के लिए:** रोज़ सूर्योदय के आसपास उठें, 15-20 मिनट धूप में रहें। रीढ़ सीधी रखें — यह सूर्य की सबसे सरल साधना है।
• **शनि के लिए (अंतर्दशा):** एक काम रोज़ बिना नागा, चाहे छोटा हो। समय की पाबंदी। शॉर्टकट का त्याग। मज़दूर या बुज़ुर्ग की सच्ची मदद।
• **गुरु के लिए (लग्न-रक्षा):** रोज़ थोड़ा पढ़ें — कुछ ऐसा जो मन को बड़ा करे। संयम — विशेषकर वाणी में।

मुख्य बातें

• **माणिक** अभी का और जीवन-भर का रत्न — दोनों एक ही, इससे बड़ा संकेत क्या होगा
• **विष्णु या हनुमान जी** आपके स्वाभाविक इष्ट — मन जहाँ जुड़े, वही सच्ची पूजा
• **सूर्य और गुरु के मंत्र** — सप्ताह में एक-एक बार, नियमित रहें
• **शनिवार का दान** इस अंतर्दशा में विशेष — बिना दिखावे के, सच्चे मन से
• **सूर्योदय पर उठना और धूप में समय** — यह कोई भी कर सकता है, और इसका असर सबसे पहले दिखता है

❖ ✦ ❖

शुभाशीष व जीवन-सूत्र

अ ध्या य 10

शुभाशीष व जीवन-सूत्र

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में सिंह लग्न पर गुरु विराजमान हैं और मंगल अपनी स्वराशि मेष में भाग्य-भाव को बल दे रहे हैं — यह संयोग बताता है कि **आपका जीवन-पथ कठिनाइयों से होकर गुज़रता ज़रूर है, पर मंज़िल आपकी अपनी है।** जो व्यक्ति इस कुंडली को लेकर जन्मा है, उसे न किसी की दया चाहिए, न किसी का सहारा — बस अपने भीतर की आवाज़ को थोड़ा और ध्यान से सुनने की ज़रूरत है।

आपकी सबसे बड़ी शक्ति — जो कभी न भूलें

लग्न में गुरु की उपस्थिति एक ऐसा वरदान है जो जीवन भर काम आता है। **जब भी आप किसी के लिए निःस्वार्थ भाव से खड़े हुए हैं — किसी को समझाया, किसी का बोझ उठाया, किसी को रास्ता दिखाया — उस हर पल में आपकी कुंडली का सबसे सुंदर पक्ष जागा है।** गजकेसरी योग आपको यश देता है, पर वह यश उन्हीं क्षणों में मिलता है जब आप देने की मुद्रा में होते हैं, लेने की नहीं।

भाग्य-भाव में स्वराशि मंगल — यह आपको याद दिलाता है कि **आपका भाग्य आपके साहस से बनता है, प्रतीक्षा से नहीं।** जब भी किसी काम में पहला क़दम उठाने में झिझक हुई हो, उस झिझक को ही पहले जीतिए — बाकी रास्ता खुलता जाएगा।

वह एक बात जो मन में रखें

वृश्चिक चंद्र और ज्येष्ठा नक्षत्र — यह जोड़ आपके मन को गहरा बनाता है, पर कभी-कभी उसी गहराई में डूब भी जाते हैं। **जो बात मन में घर कर गई, उसे बाहर निकालना सीखिए — किसी अपने से, या काग़ज़ पर।** जो भीतर रह जाए वह धीरे-धीरे बोझ बनता है; जो बाहर आ जाए वह हल्का हो जाता है।

अभी के समय का सूत्र

सूर्य महादशा में शनि अंतर्दशा — यह समय धैर्य और अनुशासन का है। **फ़रवरी 2027 से बुध अंतर्दशा आएगी, और उस समय आपकी वाणी व बुद्धि का नया द्वार खुलेगा।** अभी जो भी कर रहे हैं, उसे पूरी तरह करते रहिए — यह नींव का समय है, निर्माण का समय आने ही वाला है।

मुख्य बातें

- **देना आपकी प्रकृति है** — इसे कमज़ोरी नहीं, अपनी ताक़त मानिए।
- **साहस का पहला क़दम उठाइए** — भाग्य उसी के साथ चलता है।
- **मन की बात बाहर लाइए** — गहराई शक्ति है, पर एकांत में सड़ने न दीजिए।
- **फ़रवरी 2027 तक धैर्य** — उसके बाद का समय आपके लिए खुलता है।
- आप जैसे हैं, वैसे ही पर्याप्त हैं — **बस अपने भीतर के उस शांत स्वर को सुनते रहिए जो हमेशा सही राह जानता है।**

ईश्वर आपको स्वास्थ्य, स्थिरता और वह संतोष दे जो सचमुच आपका अपना हो। 🙏

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ सम्पूर्ण जन्मपत्री ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।